तीसरा अध्याय

मनोविज्ञानःसैद्धांतिक चर्चा

3.1 मनोविज्ञानःसैद्धांतिक चर्चा

मनोविज्ञान या 'psychology' शब्द यूनान के 'psyche' और 'logos' से बना है। 'psyche' माने 'आत्मा' तथा 'logos' का अर्थ है 'ज्ञान'। इसप्रकार आत्मा का ज्ञान मनोविज्ञान है। अतः मनोविज्ञान वह विज्ञान है जिसके अंतर्गत मनुष्य की आत्मा के विषय में चर्चा होती है। बदलते हुए विज्ञान होने के कारण मनोविज्ञान के विषय क्षेत्र में भी परिवर्तन हुआ। अतः मनोविज्ञान का विषय आत्मा से 'मन' की ओर गया।

"मनोविज्ञान वह विज्ञान है जो मन की चेतन और अचेतन क्रियाओं का अध्ययन अपरोक्ष अनुभूति द्वारा मनुष्य की बाह्य क्रियाओं का निरीक्षण करके करता है।"[1]

मनोविज्ञान का अर्थ है- 'मन का विज्ञान'। मनोविज्ञान मानव मन एवं व्यवहार का वैज्ञानिक अध्ययन है। प्रसिद्ध ग्रीक दार्शनिक 'अरस्तु' ने कहा है कि मनोविज्ञान आत्मा का ज्ञान है। परंतु अरस्तु शरीर और आत्मा की समुचित व्याख्या नहीं कर पाए। 'विलियम जेम्स' ने मनोविज्ञान को 'चेतना' का विज्ञान कहा है।

मनोवैज्ञानिकों ने मनोविज्ञान की अनेक परिभाषाएँ दी है। डब्ल्यू.एस.रॉय ने "मनोविज्ञान को समस्त चेतन प्राणियों के व्यवहार का विज्ञान प्रताया है।"[2] (Psychology is the science of behaviour of the living animals). पी.बी.पिल्सबरी ने मनोविज्ञान की परिभाषा यों दी है- "Psychology may be most satisfactorily defined as the science of human behaviour."[3]

मैक्डूगल, वुडवर्थ तथा एन.एल.मन आदि प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिकों ने भी मनोविज्ञान को मनुष्य के व्यवहार का विश्लेषक माना है। मनुष्य केवल चेतन प्राणी ही नहीं, बल्कि सामाजिक प्राणी भी है। उसका व्यवहार बदलता रहता है। समाज में सभी सदस्यों पर सदा आर्थिक, धार्मिक तथा सामाजिक परिवर्तन का प्रभाव पड़ता रहता है और उसकी स्वाधीनता के अधीन मानसिक परिवर्तन होना स्वाभाविक है। अतः मनोविज्ञान एक सीमा तक जैविक एवं सामाजिक विज्ञान भी है।

3.1.1 मनोविज्ञानःपरिभाषा

मनोविज्ञान का अर्थ अनेक विद्वानों ने अलग-अलग तरह से दिया है। क्योंकि मनोविज्ञान विकासशील और गतिशील है। जर्मनी के प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक वूण्ड ने लीपझिंग (Leipzig) में पहली मनोवैज्ञानिक प्रयोगशाला स्थापित की। इन्होंने प्रयोग करके मनोविज्ञान को विज्ञान के रूप में दर्शाया। (वोल्फ) wolf नामक मनोवैज्ञानिक के अनुसार हमारे मन अथवा आत्मा में इच्छा, स्मरण, तर्क आदि विभिन्न क्रियाओं की भिन्न-भिन्न शक्तियाँ हैं। जब हम इन शक्तियों को अभ्यास करते हैं तो उसे मनोविज्ञान कहते हैं।

उन्नीसवीं शताबदी में इंग्लैण्ड में गाल्टन (Galton) ने व्यक्तिगत अंतर के मनोविज्ञान की सृष्टि की। उसके अनुसार दो व्यक्तियों के भावों में अंतर है, वही मनोविज्ञान है। इसको psychology of Individual difference कहते है। उन्होंने स्मृति पर भी काम किया है, जिस पर सबसे अधिक महत्वपूर्ण काम एबिंगहॉस (Ebbinghaus) ने किया। इस काल में विलियम जेम्स नामक

मनोवैज्ञानिक ने लगभग मनोविज्ञान के प्रत्येक क्षेत्र में कार्य किया। बीसवीं शताब्दी में पैवलन नामक रूसी मनोवैज्ञानिक ने शरीर शास्त्र के प्रतिबद्ध अनुक्रिया (condition response) पर किए गए प्रयोगों को मनोविज्ञान की इस दिशा में प्रयोग करने केलिए प्रोत्साहित किया। पैवलन के प्रभाव से इसी समय वॉटसन (Waltson) मनोविज्ञान के क्षेत्र में मन अथवा चेतना शब्द मनोविज्ञान से निकाल देने का प्रस्ताव रखा। अब तक मनोविज्ञान का अर्थ था मन अथवा चेतना का विज्ञान। वॉटसन ने उसको व्यवहार का विज्ञान (Science of behaviour) कहा। मनोविज्ञान को वैज्ञानिक स्तर पर लाने में विलियम मैकडुगल (William Macdugal) का सबसे महत्वपूर्ण कदम था।

१९१२ में वॉटसन के समकालीन मनोवैज्ञानिक विलियम मैकडुगल ने कहा है- "जीवित वस्तुओं के व्यवहार से विधायक विज्ञान" मनोविज्ञान है। (The positive science of behaviour of a living thing.) मनोविज्ञान की यह परिभाषा उसका आधुनिक अर्थ स्पष्ट करती है। यद्यपि वह अत्यधिक विस्तृत है। इसी काल में कोफका, कोहलर और वदोईमट वैज्ञानिकों ने प्रत्यक्ष 'perception' की प्रक्रिया का अध्ययन किया और 'गैस्टाल्ट वाद' की स्थापना की। दूसरी ओर वियन्ना (Vienna) के 'सिग्मण्ड फ्राइड' ने मनोविश्लेषण की स्थापना करके मनोविज्ञान का और एक नया क्षेत्र खोल दिया। बीसवीं शताब्दि में मनोविज्ञान का क्षेत्र इतना विस्तृत होगया कि प्रमुख मनोवैज्ञानिकों के नाम भी गिनना मुश्किल हो गया। इस समय इसको मनोविज्ञान का दर्जा प्राप्त हो गया। मनोविज्ञान मन का विश्लेषण और व्यवहार की कसौटी है।

3.1.2 मानव जीवन में मनोविज्ञान की उपयोगिता

मनोविज्ञान की इकाई व्यक्ति है। प्रत्येक व्यक्ति के व्यवहार का अध्ययन करना अवश्यक है। मनुष्य व्यवहार में हाथ पैर हिलाता है, हँसना, बोलना आदि शारीरिक क्रिया भी होती है। मनोविज्ञान व्यक्ति के व्यवहारों का, अनुभवों का, प्रयत्नों का, इच्छाओं का, विचारों का व चेष्टाओं का वर्णन करता है।

मनुष्य अविरत मनःशांति चाहता है जो एक अदृश्य एवं आत्मिक सुख मात्र है। यह सुख मनोविज्ञान द्वारा प्राप्त हो सकता है। मनोविज्ञान के अध्ययन से मनुष्य की जिज्ञासा शांत हो सकती है। जिसप्रकार प्रत्येक व्यक्ति के लिए शारीरिक स्वास्थ्य आवश्यक है उसी प्रकार मानसिक स्वास्थ्य भी आवश्यक है। आजकल के अध्यापन तथा अध्ययन कार्य में भी मनोविज्ञान का महत्वपूर्ण योगदान है।

साहित्य के क्षेत्र में मनोविज्ञान महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। नाटक और उपन्यास तभी सफल होते हैं जब कि साहित्यकार उनमें मानव की सूक्ष्मतम भावनाओं का स्पर्श करता है। प्रेम की सफलता केलिए प्रेमी-प्रेमिकाओं को एक दूसरे के मन को जानना आवश्यक हो जाता है। पारस्परिक प्रेम का उद्‌गम सर्वप्रथम मानसिक धरातल पर ही हो जाता है। धर्मोपदेशकों को भी समाज की मनोवृत्ति का ज्ञान होना बहुत आवश्यक होता है। डॉक्टरों को भी मनोविज्ञान से पर्याप्त लाभ हो सकता है, क्योंकि बहुत से रोग डॉक्टर के सहानुभूतिपूर्ण एवं प्रेममय व्यवहार से ही दूर हो जाते हैं। मानसिक रोगों का इलाज भी मनोवैज्ञानिक चिकित्सक आजकल प्रचरित मानसोपचार शास्त्र के द्वारा कर सकता है। इससे

स्पष्ट होता है कि मानव जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में मनोविज्ञान अत्यंत सहायक तथा उपयोगी रहता है।

3.2 मनोविज्ञान और मनोविश्लेषण

मनोविश्लेषण मनोविज्ञान से संबंधित एक विशेष प्रकार की विधि है। जिसके द्वारा मन की अंतरानुभूतियों का विश्लेषण किया जाता है। कथापात्रों के बाह्य व्यक्तित्व की उपेक्षा उसके अंतज्ञ विषयक अनुभाविक व्यजनों की कुशलताओं के साथ मनोविश्लेषण में विश्लेषित किया गया है। मनोविज्ञान मन संबंधी विज्ञान का प्रस्तोता है। जहाँ तक मन का प्रश्न है वह अदृश्य, अस्पष्ट,अस्पृश्य, विवादास्पद और अनुमानित है। मन स्थिति का विश्लेषक व्याख्याता मनुष्य का व्यवहार है। 'पिल्सबरी, मैक्डूगल, वुडवर्थ आदि प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिकों ने मनोविज्ञान को मनुष्य के व्यवहार का विश्लेषक माना है।' मनोविज्ञान मन की क्रियाओं का विज्ञान है। मन की क्रियाएँ अपरिचित हैं यही कारण है कि मनोविज्ञान द्वारा कथा साहित्य की विषयवस्तु जुटाने की कोई सीमा नहीं है। "मन और शरीर परस्पर निरपेक्ष हैं, पर उनमें निरंतर क्रिया-प्रतिक्रिया चलती रहती है अतः शरीर से पृथक मन का तथा मानसिक व्यापारों का अध्ययन संभव ही नहीं संगत भी है।"[4]

प्रेम, घृणा, क्रोध, ईर्ष्या, स्वार्थ आदि मनोभावों के घात-प्रतिघात के आधार पर किसी भी कलाकृति को स्थूल वर्णन द्वारा मनोवैज्ञानिक पुट दिया जा सकता है। मन की अवस्थाएँ भी नयी दृष्टिकोण से विवेचित की जाने लगी हैं। उन्हें चेतन, अचेतन और अर्धचेतन तीन भागों में विभाजित किया जा चुका है। आधुनिक मनोविज्ञान के अनेक संप्रदायों में स्वप्न, दिवास्वप्न और संस्मरणों के

अधिक महत्व दिया जाने लगा है। अतः यह निर्विवाद है। वैज्ञानिक अध्ययन से पुष्ट मनोविज्ञान ही मनोविश्लेणात्मक विधि की कथाकृतियों का आधार बन चुका है।

मनोविश्लेषण एक विशेष युक्ति है जिसके द्वारा अज्ञात मन के अंदर स्थित द्वंद्व एवं भावना ग्रंथियों की जानकारी प्राप्त की जाती है। सभी प्रणियों का समुचित व्यवहार उनकी मानसिक शक्ति पर निर्भर करता है। मनोविश्लेषण इसी मानसिक शक्ति के उद्‌गम और वितरण का अध्ययन करता है। इस प्रकार यह भी एक मानसिक उपचार विधि है। इसकी अपनी धारणाएँ तथा मान्यताएँ हैं। इसे एक स्वतंत्र विज्ञान माना जा सकता है।

फ्रायड एक चिकित्सक था, उसने मानसिक रोगों की चिकित्सा में मनोवैज्ञानिक पद्धतियों का सहारा लिया और इन अध्ययनों के फलस्वरूप उसने मानव प्रकृति का अध्ययन अधिक गहराई से किया। फ्रायड ने वैयक्तिक मनोविज्ञान (individual psychology) और विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान (analytical psychology) का आरंभ भी किया। अतः फ्रायड ने एक नए प्रकार की मनोचिकित्सा का आरंभ किया। जिसे मनोविश्लेषण कहते हैं।"[5]

फ्रायड द्वारा अन्वेषित इस मानसिक चिकित्सा विधि के अंतर्गत "मानसिक रोगों का उपचार सरलता से किया जा सकता है और इसका प्रभाव स्थायी होता है। इस विधि के तहत अज्ञान मन के अंतर्द्वंदों तथा भावना ग्रंथियों का पता लगाया जा सकता है। यह एक सकारात्मक विज्ञान या सिद्धांत है जिसकी निज की अपनी धारणाएँ और मान्यताएँ भी होती है।"[6]

मनोविश्लेषण (psycho analysis) के प्रवर्तक के रूप में फ्रायड का नाम मुख्य रूप से सामने आता है। एडलर और युंग भी प्रारंभ में फ्रायड के अनुगामी और सहयोगी रहे। कालांतर में उनकी मान्यताएँ फ्रायड की मान्यताओं से इतनी भिन्न हुई कि वे अलग हो गए और अपनी मान्यताओं को उन्होंने स्वतंत्र सिद्धांतों के रूप में प्रस्तुत किया।

विश्लेषणातमक मनोविज्ञान के संस्थापक युंग ने सामूहिक अचेतन और व्यक्तित्व के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिए हैं। हिस्टिरिया, चिंता तथा मनोग्रस्तता रोग के रोगियों को मनोविश्लेषण पद्धति से काफी लाभ हुआ है। इसका कारण यह है कि दमन को खोजकर प्रतिरोधों का पता लगाकर, दमित को निर्विष्ट करके कार्य में सफलता पाना, प्रतिरोधों को दूर करना, दमन को हटा देना, अचेतन वस्तु को चेतन वस्तु में बदल देना और स्मृतियों में खाली स्थानों को भरना मनोविश्लेषण पद्दति द्वारा संभव हो सका है।

मनोविश्लेषण के तीन अर्थ इस प्रकार हैं-

(१) "मनोविश्लेषण एक प्रविधि है (technique), जिसके माद्यम से एक व्यक्ति के मानसिक जीवन के गत्यात्मक चेतन एवं अचेतन की खोज की जाती है।

(२) मनोविश्लेषण मनोचिकित्सा (phychotherapy) का एक प्रकार है जिसके माध्यम से स्नायुविकृति मनोविकृति व्यक्तियों के उपचार एवं पुर्ननिर्माण का प्रयत्न किया जाता है, जिससे एक व्यक्ति अपनी जीवन समस्याओं के साथ समायोजन कर सके और सुखी जीवन व्यतीत कर सके।

(३) मनोविश्लेषण मनोविज्ञान का संप्रदाय या एक व्यवस्था है। इससे तात्पर्य है कि मनोविश्लेषण का उपयोग असामान्य लोगों केलिए ही नहीं, बल्कि सामान्य लोगों केलिए भी उपयोगी है।

3.2.1 मनोविश्लेषण के सिद्धांत

मनोवैज्ञानिकों ने मन के विषय में ज्ञान प्राप्त करने की तीन विधियाँ बतायी हैं-

(१) अंतः प्रेक्षण विधि (Introspection)

(२) बाह्य निरीक्षण विधि (observation)

(३) प्रयोग विधि (experimental method)

विश्लेषणात्मक कथा साहित्य में अंतः प्रेक्षण विधि को सर्वाधिक महत्व दिया गया है। जिसमें पात्र अपना विश्लेषण स्वयं करता है। अंतः प्रेक्षण विधि का विकसित रूप फ्रायड द्वारा प्रतिष्ठित मनोविश्लेषण विधि में प्रकट हुआ। फ्रायड अपने मनोविश्लेषण सिद्धांत के अंतर्गत व्यक्तित्व संरचना, व्यक्तित्व विकास आदि पर विशेष बल दिया। मनोविश्लेषणात्मक विधि को समझने केलिए फ्रायड चार शब्दों का प्रयोग किया है-

(१) अचेतन मस्तिष्क (unconscious mind)

(२) लिबिडो (libido)

(३) दमन (repression)

(४) इडिपस ग्रंथि (Oedipus complex)

फ्रायड मन की तीन स्थितियाँ मानते हैं- चेतन,अचेतन और अर्धचेतन। अचेतन की कल्पना फ्रायड की महत्वपूर्ण देन मानी जाती है। फ्रायड की मान्यता है कि अचेतन मन की स्थिति असीम और विस्फोटक रूप में है। मानव मस्तिष्क का तीन चौथाई भाग इसी अचेतन की परिधि में बंद रहता है। यही चेतना की स्वरूप की परिधि है। चेतन और अचेतन के मध्य अर्धचेतन को मानते हैं। अर्धचेतन के मार्गों से ही अर्धचेतन की संचित अनुभूतियाँ मन तक पहुँचाती है। फ्रायड ने चेतन और अवचेतन मन के मध्य एक प्रहरी की कल्पना की है यह प्रहरी अवांछनीय विचारों का मार्ग बंद रखता है। फ्रायड के सिद्धांत दमन (repression) की क्रिया के साथ निरोध (supression) का भी महत्वपूर्ण स्थान है। ज्ञान रूप से की गई रोकथाम को उसने निरोध (supression) का नाम दिया है।

इडिपस ग्रंथि की परिकल्पना भी फ्रायड के सिद्धांत में महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं। लिबिडो अत्यधिक शक्तिशाली है और बाहरी जीवन में अपनी अभिव्यक्ति चाहती है। इस अभिव्यक्ति केलिए वह स्वरति (self libido) और परात्मक रति (objective libido) उत्पन्न करती है। फ्रायड ने भी अहं भाव के दो रूप बताए हैं-अहं (ego) और परम् (super ego)। अहं व्यक्तित्व का चेतन अंश है, लेकिन परम् अहं प्राणाघातक है। इसी कारण व्यक्ति ने चेतन व्यवहार में विकृति उत्पन्न होती है। मानव मन की इन विकृतियों और विचित्रताओं केलिए फ्रायड कुछ पारिभाषिक शब्द देते हैं जैसे आरोपण (projection) तादात्म्यीकरण (identification) स्थानांतरीकरण (transference) और बद्धत्व (fixation) का उदीत्तीकरण (sublimation)।

समकालीन कथा साहित्य में स्वप्नों तथा दिवास्वप्नों की चर्चा भी चल पड़ी है। फ्रायड की मान्यता के अनुसार कोई भी स्वप्न व्यर्थ नहीं होता। अपितु चेतना अवस्था की संपित अनुभूतियों का स्वप्नावस्था में अप्रत्याभिज्ञान ही होता है। स्वप्नों का उद्‌गम अवचेतन मन है। लेकिन उस का वस्तु विधान चेतन अवस्था की जीवितानुभूतियाँ ही हैं। एडलर वैयक्तिक मनोविज्ञान की स्थापना की है। जिसमें हीनता की ग्रंथियों को प्रधानता दी गई। यही नहीं उन्होंने लिबिडो को काम मूलक मानने से इनकार कर दिया। युंग ने वैश्लेषिक मनोविज्ञान पर कार्य कर इसे दार्शनिक परिभाषा दी। युंग के अनुसार अचेतन में भी दो रूप माने गए हैं- वैयक्तिक अचेतन तथा समस्त अचेतन। युंग मानव को दो कोटी में विभक्त करते हैं- बहिर्मुखी मानव और अंतर्मुखी मानव। गेस्टाल्ट संप्रदाय के विद्वान मानते हैं कि वस्तु का ज्ञान स्वतः ही प्राप्त नहीं होता वह दूसरी वस्तुओं की सापेक्षता में ही संभव है। संसार की हर चीज़ में संपूर्णता देनेवाला भाव अव्यवस्थित होता है। पूर्णता ही वास्तविकता है। मनोविज्ञान और मनोविश्लेषण वस्तु और शिल्प दोनों की क्षेत्रों में आधुनिक कथा साहित्य को अत्यधिक प्रभावित किया है।

3.3 मनोवैज्ञानिक अध्ययन के क्षेत्र

मनोविज्ञान के क्षेत्र बहुत बड़ा है। सामान्य, असामान्य, मनुष्य, पशु, बालक, वयस्क इन सभी के व्यवहार का अध्ययन मनोविज्ञान के द्वारा किया जाता है।

1. समाज मनोविज्ञान (Social Psychology)

भीड, समूह, श्रोता आदि का इस मनोविज्ञान में अध्ययन किया जाता है। इसमें व्यक्ति की क्रियाओं का निरीक्षण किया जाता है। नेता, सेनापति व समाज

सुधारकों केलिए इसका अभ्यास बहुत ज़रूरी है। अर्थशास्त्र तथा समाज शास्त्र केलिए यह मनोविज्ञान बहुत ज़रूरी है। सामाजिक समस्या, पूर्वाग्रह व अपराधों का इससे अध्ययन होता है। अपराधियों का पता लगाना, उन पर नियंत्रण पाना तथा उस पर सुझाव देना आदि इस विज्ञान का कार्य क्षेत्र है।

2. विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान

विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान के द्वारा मनुष्य के स्वाभाविक व्यवहार की या मस्तिष्क की स्वाभाविक क्रियाओं का अध्ययन किया जाता है। इस अध्ययन में जटिल प्रक्रियाओं का विश्लेषण करके भिन्न-भिन्न अंगों को अलग किया जाता है।

3. उत्पत्ति मूलक मनोविज्ञान

इसका मनोविश्लेषणात्मक मनोविज्ञान के साथ बड़ा संबंध है। इसमें बालक, किशोर व प्रौढ़ सभी का अध्ययन किया जाता है। यह व्यक्ति तथा प्रजा के उत्पत्ति का क्रमिक विकास करता है।

4. पशु मनोविज्ञान

पशु मनोविज्ञान को तुलनात्मक मनोविज्ञान भी कहते हैं। क्योंकि पशु व मनुष्य की तुलना इसमें की जाती है। मनुष्य के ऊपर जो प्रयोग न किए जाते हों वो पशुओं के ऊपर करके उसका निष्कर्ष निकालते हैं। पशुओं पर ऐसे प्रयोग किए जाते हैं जैसे मस्तिष्क के किसी भाग को निकाल कर उसका प्रभाव देखना हो तथा वंशातु संबंधी अनेक प्रयोग पशुओं पर ही किए जाते हैं। आनुवंशिता के

प्रभाव को देखने केलिए 'वीस मैन' ने बहुत सी पीढ़ियों तक चूहों की दुमों को काटकर देखा, फिर भी दुम तो वैसी ही रही। ऐसे प्रयोग मनुष्य पर नहीं किए जा सकते। पशु मनोविज्ञान में विशेषतः पशुओं का सीखने का ढ़ंग उनका मूल प्रवृत्तियाँ उनकी आदतें आदि अध्ययन किया जाता है।

5. बाल मनोविज्ञान (Child Psychology)

इसमें बालक का विकास, उसमें संवेदना, प्रत्यक्ष स्मृति, कल्पना आदि मानसिक प्रक्रियाओं का तथा उत्पत्ति व विकास का अध्ययन किया जाता है। इसका क्षेत्र गर्भस्थ शिशु से लेकर बारह वर्ष तक के शिशु के अध्ययन से होता है। इसलिए इसमें उसकी शिक्षा, सुधार, उसके शारीरिक व मानसिक विकास तथा उसके स्वास्थ्य की रक्षा आदि आते हैं।

6. किशोर मनोविज्ञान

बाल मनोविज्ञान की सीमा के बाद मानव का किशोर मनोविज्ञान होता है। इसमें बारह से इक्कीस वर्ष तक के व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक, व्यक्तिगत, सामाजिक तथा विभिन्न प्रकार के विकास का अध्ययन किया जाता है। मनुष्य के जीवन में किशोर अवस्था बड़ी महत्वपूर्ण होती है। इस आयु में क्रांतिकारी परिवर्तन आ जाता है, जिसमें व्यक्ति कभी-कभी भटक जाता है। किशोर मनोवैज्ञानिक इन परिवर्तनों का अध्ययन करके उनके महत्व व नियंत्रण के उपायों का पता लगाते हैं।

7. वैयक्तिक मनोविज्ञान

वैयक्तिक मनोविज्ञान में व्यक्तियों की समानता का और साथ-साथ व्यक्तिगत विभिन्नताओं का भी अध्ययन किया जाता है। उदाहरण केलिए युंग ने व्यक्तियों के तीन प्रकार मानते हैं- अंतर्मुखी, बहिर्मुखी और उभयमुखी।

8. मानव विभिन्नता का मनोविज्ञान

इसमें व्यक्ति और समूह के मनोवैज्ञानिक जीवन की विभिन्नता के रूप और सीमा का अध्ययन किया जाता है, और इन विभिन्नताओं में किस चीज़ का प्रभाव पड़ता है, इसकी व्याख्या की जाती है। इसमें विभिन्न प्रकाशन विधियों की विवेचना की जाती है और हस्तलिपि, चेहरे की आकृति तथा अन्य लक्षणों से मानव-विभिन्नता के अध्ययन में भी सहायता ली जाती है। इस प्रकार बुद्धि, परीक्षा, व्यक्तित्व, वंशानुक्रम, पर्यावरण आदि का अध्ययन किया जाता है।

9. असामान्य मनोविज्ञान (Abnormal Psychology)

इसमें असामान्य व्यक्ति का अध्ययन किया जाता है। इस मनोविज्ञान में वातोलमात अथवा उन्माद (Hysteria), वाणी भिन्नता, भ्रांति और स्मृति ध्वंस का अध्ययन किया जाता है। इनके निदान से उनके उपचार करने के नियम निकाले जा सकते हैं। मनो-विकृतियाँ तथा मन की असामान्य व्यवस्थाओं का इसमें अध्ययन किया जाता है।

10. मनोविश्लेषण विज्ञान (Psychoanalysis Science)

इसका संस्थापक सिग्मैन फ्राइड (Sigmund Freud) था। इन्होंने स्वप्न, दिवास्वप्न, करने-लिखने, बोलने-लिखने की त्रुटियाँ, भूलना, हास्य-विनोद, कला, धर्म, साहित्य आदि सभी का विश्लेषण करके उनके अचेतन कार्यों का पता लगाया और मनोविज्ञान के क्षेत्र में अत्यंत मनोरंजक तथा विशाल साहित्य का निर्माण किया। इसका उपयोग मानसिक रोगों के चिकित्सा का एक विधि निकालना था। उसके समकालीन एरिक फ्रोम (Eric frum) ने मनोविश्लेषण द्वारा मानव के जीवन के लगभग प्रत्येक पक्ष का विश्लेषण करके बड़े ही महत्वपूर्ण तथ्य एकत्रित किए।

11. प्रेरणात्मक मनोविज्ञान

यह मनोविज्ञान असामान्य व मनोविश्लेषण मनोविज्ञान में से निकाला गया है। यह साधारण प्रेरणा का मनोविज्ञान भी कहलाता है। जब जीव अथवा व्यक्ति की उन आंतरिक प्रेरणाओं का अध्ययन करता है जिनकी बाह्य जगत् में संतुष्टि करने की चेष्टा की जाती है। यह मनुष्य के उन उलझनों का अध्ययन है जो इच्छाओं और आंतरिक प्रेरणाओं के संतुष्ट न होने के कारण उसके व्यक्तित्व का संतुलन बदलती है। इन उलझनों के अध्ययन में मानव व्यक्तित्व के क्रमिक विकास का अध्ययन किया जाता है। इस अध्ययन में वह प्रौढ़ व्यक्ति की आदतों, विशेषताओं और व्यवहार के स्रोतों की शैशव, बचपन या किशोर अवस्था में खोजता है। इन खोजों से उलझनों के कारणों का पता लगाकर व्यक्ति को अधिक संतुलित और परिणामस्वरूप तथा मनुष्य को अधिक सुखी बनाने की चेष्टा की जाती है।

12. लोक मनोविज्ञान (Folk Psychology)

लोक मनोविज्ञान का मुख्य उद्देश्य किसी भी देश के आदिवासियों के अंधविश्वासों, पौराणिक कथाओं तथा संगीत, कला, धर्म में निहित मनोवैज्ञानिक पक्षों की व्याख्या करना होता है। और इस आदिवासी समाज को आधुनिक समाज से तुलना करते हैं। इसके अलावा इस मनोविज्ञान में विभिन्न समाजों का मानसिक विश्लेषण किया जाता है।

13. शारीरिक मनोविज्ञान (Physiological Psychology)

इसमें विभिन्न प्रकार की चेतनाओं, मस्तिष्क, सुषुम्ना, ज्ञान तंतुओं, ज्ञानेंद्रियों और मांसपेशियों के परस्पर संबंध के बारे में अध्ययन किया जाता है। वास्तव में मानसिक क्रियाओं का शारीरिक क्रियाओं से अभिन्न संबंध है। मनोविज्ञान मानसिक क्रियाओं का अध्ययन करता है और मानसिक तथा शारीरिक संबंध अभिन्न होने के नाते मनोविज्ञान में शारीरिक क्रियाओं का अध्ययन अवश्य हो जाता है। यह मनोविज्ञान दुःसाध्य उन्माद (Psychosis) और मनस्ताप (Neurosis) के परस्पर संबंधों का भी अध्ययन करता है।

14. मनोभौतिक विज्ञान

इसमें मानसिक प्रक्रियाओं, संवेदनाओं और भौतिक उद्दीपनों (Physical stimulai) के बीच परिमाणात्मक संबंधों (Quantitative Relations) का अध्ययन किया जाता है।

15. प्रयोगात्मक मनोविज्ञान (Experimental Psychology)

यह मनोविज्ञान की महत्वपूर्ण शाखा है। यह प्रयोगों की सहायता से शिशु, बालक, किशोर, प्रौढ़ तथा वृद्ध मनुष्यों और पशुओं की विभिन्न बाह्य क्रियाओं जैसे सीखना, बोलना तथा आंतरिक प्रक्रियाओं जैसे अभिवृत्ति आदि व्यवहार के सभी पहलुओं का अध्ययन करता है। प्रयोगों की सहायता से व्यक्तियों की बुद्धि, स्मृति, कल्पना, तर्क आदि विभिन्न शक्तियों का तथा विशेष मनोवृत्तियों का अध्ययन किया जाता है। प्रयोग गुणात्मक तथा परिमाणात्मक होते हैं।

16. विकासात्मक मनोविज्ञान (Developmental Psychology)

इसमें व्यवहार तथा मानसिक क्रियाओं का एक क्रम से अध्ययन किया जाता है। इसमें विकास का अध्ययन करके उसके कारणों का विश्लेषण किया जाता है। विभिन्न व्यक्तियों के विकास का तुलनात्मक अध्ययन इसमें होता है। विकास के क्रम में विभिन्न परिवर्तनों का अध्ययन करके उनके नियंत्रण के उपायों की व्याख्या इसमें की जाती है।

17. व्यवहारिक मनोविज्ञान (Applied Psychology)

मनोविज्ञान सिद्धांतों का मानवीय समस्याओं को सुलझाने में प्रयोग करना व्यावहारिक मनोविज्ञान का कार्यक्षेत्र है। इसकी कई शाखाएँ हैं नैदानिक मनोविज्ञान (Clinical Psychology), व्यावहारिक मनोविज्ञान का कार्य क्षेत्र (Field of counseling in Applied Psychology), शिक्षा का क्षेत्र, सरकारी नौकरियों केलिए चुनाव का क्षेत्र, उद्योग और व्यापार का क्षेत्र और कानून का क्षेत्र आदि में इसका उपयोग होता है।

मनोविज्ञान केवल सैद्धांतिक विज्ञान नहीं है। वास्तव में सिंद्धांत और व्यवहार को पूर्ण रूप से अलग किया भी नहीं जा सकता है। अतः मनोविज्ञान मानव जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में मानव संबंधी समस्याओं को समझने और सुलझाने तथा मनुष्यों के अधिक अच्छे अभियोजन में सहायक सिद्ध होता है। शिक्षा, व्यापार, उद्योग, पारिवारिक-सामाजिक-वैयक्तिक जीवन, युद्ध, शांति आदि सभी क्षेत्रों में मनोविज्ञान की प्रयोग होता है।

3.4 मनोवैज्ञानिक अध्ययन की पद्धतियाँ

आधुनिक मनोविज्ञानवेत्ता मनोविज्ञान के अध्ययन केलिए वैज्ञानिक पद्धतियों का सहारा लेता है। वैज्ञानिक अनुसंधानों और खोजों का आधार यथार्थ वस्तुनिष्ठ और यथातथ्य होता है। 'जेम्सबिन फ्रेड ने मनोवैज्ञानिक विश्लेषण केलिए मुख्यतः तीन प्रकार की अध्ययन पद्धतियों को स्वीकार किया है।'[7]

1. निरीक्षण पद्धति
2. प्रयोगात्मक पद्धति
3. विवरण पद्धति

1. निरीक्षण पद्धति

मनोविज्ञान में निरीक्षण की दो पद्धतियाँ मानी गई है (क) अंतर्दर्शन (ख) बहिर्दर्शन। जब मनोवैज्ञानिक अपने स्वयं की दशा का निरीक्षण करता है तो यह अंतर्दर्शन पद्धति कहलाती है। जब वह दूसरे के व्यवहार तथा उसकी मानसिक क्रियाओं का अध्ययन करता है तो बहिर्दर्शन पद्धति कहलाती है।

2. प्रयोगात्मक पद्धति

प्रयोगात्मक पद्धति में वातावरण पर पूरा-पूरा नियंत्रण रखकर जिस वस्तु या व्यक्ति पर प्रयोग किया जाता है, उसकी मानसिक क्रियाओं का अध्ययन किया जाता है। परीक्षण केलिए किसी विशिष्ट मानसिक प्रक्रिया को चुन लिया जाता है। फिर अंतर्दर्शन और बहिर्दर्शन दोनों पद्धतियों करके परीक्षण किए जाते हैं और परिणाम के आधार पर निष्कर्ष निकाले जाते हैं।

3. विवरण पद्धति

इस पद्धति के प्रमुख चार प्रकार हैं- (क) विकासात्मक पद्धति (ख) व्यक्ति इतिहास पद्धति (ग) मनोविकृत्यात्मक पद्धति (घ) तुलनात्मक पद्धति

(क) विकासात्मक पद्धति

विकासात्मक पद्धति में व्यक्ति के मानसिक विकास का सम्यक अध्ययन कर उसकी व्याख्या की जाती है। इसके द्वारा बालक के विकास की विभिन्न अवस्थाओं में उसकी विविध मानसिक क्रियाओं का अध्ययन किया जाता है।

(ख) व्यक्ति इतिहास पद्धति

व्यक्ति इतिहास पद्धति में जिस व्यक्ति का अध्ययन किया जाता है, व्यक्ति विशेष की विलक्षणताओं को समझने केलिए उसके व्यक्तिगत इतिहास का अध्ययन किया जाता है, वह महान प्रतिभाशाली, घोर अपराधी अथवा विक्षिप्त इत्यादि होता है। इसका क्या कारण जानने केलिए उस व्यक्ति का पूर्ण इतिहास

स्वयं उसके द्वारा या उसके इष्ट-मित्र अथवा भाई-बहन, परिवार द्वारा लिया जाता है और इसी के आधार पर कुछ निष्कर्ष निकाला जाता है।

(ग) मनोविकृत्यात्मक पद्धति

मनोविकृत्यात्मक पद्धति का प्रयोग मानसिक बीमारियों अथवा मानसिक अवनति कारणों को समझने केलिए किया जाता है। इससे मानव के विचित्र व्यवहारों को समझने में बड़ी सहायता मिलती है। मनःचिकित्सक इस पद्धति का प्रयोग अपने रोगियों की बीमारियों के अध्ययन केलिए करते हैं।

(घ) तुलनात्मक पद्धति

तुलनात्मक पद्धति के द्वारा विभिन्न पशुओं के व्यवहार का तुलनात्मक अध्ययन किया जाता है। विभिन्न पशुओं की मूल वृत्तियाँ किस प्रकार का करती है, इसमें बुद्धि का विकास कैसे होता है आदि इस पद्धति के अध्ययन के विषय होते हैं। इस प्रक्रिया से व्यक्ति के व्यवहार को समझने में सहायता मिलती है।

3.5 मनोविज्ञान के प्रमुख संप्रदाय और सिद्धांत

मनोविज्ञान का प्रधान विषय मानव व्यवहार का अध्ययन है। मनोविज्ञान की विभिन्न पद्धतियों के द्वारा मानव अध्ययन से प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर कई मनोवैज्ञानिक संप्रदायों का जन्म हुआ। मनेविज्ञान के क्षेत्र में प्रमुखतः चार संप्रदाय उल्लेखनीय है।

(क) मनोविश्लेषणवादी संप्रदाय (ख) गेस्टाल्टवादी संप्रदाय (ग) व्यवहारवादी संप्रदाय (घ) वातावरणवादी संप्रदाय।

3.5.1 मनोविश्लेषणवादी(फ्रायड) संप्रदाय

मनोविश्लेषणवादियों में सर्वप्रथम सिगमण्ड फ्रायड का नाम आता है। उनका जन्म (1856-1939) में मोरविया के एक यहूदी परिवार में हुआ था। मनोविश्लेषणवादियों ने सर्वप्रथम मानव के चेतन स्तर को भेदकर उसके अचेतन सर्वव्यापी मन में झाँकने का प्रयास किया। वस्तुतः मनोविश्लेषण मनोविज्ञान का वह अंश है जिसका लक्ष्य मानसिक शक्ति का उद्‌गम और वितरण है। यह एक ऐसा मनोवैज्ञानिक संप्रदाय है जो अचेतन के आधार पर मनुष्य के व्यक्तित्व और विशिष्ट व्यवहारों का अध्ययन करता है।

मनुष्य जाति ने कुछ शक्तियाँ अथवा वृत्तियाँ ग्रहण कर ली हैं जो जन्मगत होती है। मनुष्य जो कुछ भी करता है उसका मूल कारण अचेतन मन है।

जीवशास्त्रियों के समान फ्रायड ने दो मुख्य प्रवृत्तियों को स्वीकार किया है, जीवनवृत्ति और मृत्युवृत्ति। फ्रायड ने मृत्यु सिद्धांत को और विकसित किया। उन्होंने बताया कि मरने की प्रवृत्ति ही मारने की प्रवृत्ति में परिणित हो जाती है। इस आधार पर उन्होंने दो प्रकार के रतिक्रियाएँ मानी। स्वपीडनरति और परपीडनरति।

'काग्नेहार्ने अचेतनात्मक अभिप्रेरणा को पूर्ण रूपेण स्वीकार करती है। यह मनोविश्लेषण की सामान्य अभिधारणाओं में से एक है। फ्रायड के मनोविश्लेषण के नियमों को अस्वीकृत करने के पश्चात् उन्होंने मानव व्यवहार के आधार पर

अपने सिद्धांत का निर्माण किया। उन्होंने मानव में दो मूलभूत प्रवृत्तियाँ मानी है- सुरक्षा और संतोष।'

अस्तु विचारकों के कथन से स्पष्ट है कि मनुष्य के व्यवहार की मूल प्रेरणा कुछ मूल प्रवृत्तियाँ होती है, जो मनुष्य को किसी कार्य केलिए प्रेरित करती है।

अचेतन सिद्धांत

मनोविश्लेषणवाद की सबसे बड़ी खोज अचेतन है। फ्रायड ने सबसे पहले इस सिद्धांत की स्थापना की कि मनुष्य चेतन से ही नहीं अचेतन से भी प्रभावित होता है। उन्होंने अचेतन मन को मनोविश्लेषण का आधार भूत तत्व माना है। उन्होंने मन के तीन स्तर पहचाने हैं- चेतन, अर्धचेतन और अचेतन। मनुष्य का अचेतन मन काम मूला होता है। यह चेतन में अपनी अभिव्यक्ति चाहता है, किंतु चेतन और अचेतन के बीच अर्धचेतन एक प्रहरी(सेन्सर) के समान रहता है जो चेतन तक पहूँचनेवाली निंदनीय, निराशाजनक, लज्जोत्पादक विचारों को रोक देता है।

युंग ने फ्रायड को स्वीकार किया है। किंतु अधिक स्पष्ट करने केलिए उन्होंने अचेतन को दो भागों में विभाजित किया- व्यष्टि अचेतन और समष्टि अचेतन।

वैयक्तिक अचेतन सामूहिक अचेतन का उपरिष्ट स्तर है। इसका निर्माण विस्तृत स्मुतियों, उपचेतन, प्रतिवोधना, संनिरोधित अनुभव, दमित भावनाओं आदि से होता है।

फ्रायड और युंग के अचेतन संबंधी विचारों का तुलनात्मक अध्ययन करने से यह तथ्य भली-भाँति प्रकट हो जाता है कि फ्रायड का हर दृष्टिकोण काम से संबंधित है। दूसरी ओर युंग मनुष्य में सुरक्षा और संतोष की भावना को मानते हैं।

काम सिद्धांत

फ्रायड ने काम शब्द का प्रयोग अत्यंत व्यापक अर्थ में किया है। इसमें प्रेम, स्नेह, ममता आदि समस्त भावनाएँ समाहित हो जाती है। इस शक्ति को उन्होंने लिबिडो कहा है। काम शक्ति का साधारण अर्थ यौन परितुष्टि की अगाध आंतरिक इच्छा है। फ्रायड ने इसका क्रमशः बचपन से ही विकास माना है, यह मुखेड, फैलिक लैटेंट एवं जैनिटल अवस्थाओं में क्रमशः विकसित होती है। प्रत्येक बालक का इन अवस्थाओं से गुज़रना स्वाभाविक है।

3.5.2 मनोग्रंथियाँ

फ्रायड के काम सिद्धांत मौलिक और क्रांतिकारी है, और हमारी अब तक की धारणाओं को जड़ से हिला देनेवाली है। यह बात कल्पनातीत थी कि जन्म के साथ ही बच्चों में काम भाव उत्पन्न हो जाता है। दो वर्ष की अवस्था के बाद बालक या बालिका के लिबिडो (कामशक्ति) माता-पिता में केंद्रित होने लगती हैं। पर चूँकि इस तरह की भावना समाज में निंदनीय समझी जाती है। इसलिए इसके दमन से बालक में मातृशक्ति ग्रंथि (इडिपस कॉप्लक्स) और बालिका में पितृशक्ति ग्रंथि (इलेक्ट्रा कॉप्लक्स) का जन्म हो जाता है और भविष्य में व्यापार को प्रभावित करता रहता है।

3.5.3 इदम् अहम् और नैतिक मन

फ्रायड के अनुसार लिबिडो से तीन मानसिक संस्थाओं का जन्म होता है- इदम् (Id), अहम् (Ego), नैतिक मन (Super Ego)। व्यक्ति के यह तीन मन के भाग हैं जो मूल शक्ति के स्रोत लिबिडो से ही विकसित यथार्थ के संस्कारों में अनुकूलित सामाजिक एवं नैतिक मानदंडों द्वारा परिमार्जित होकर कार्य करते हैं।

(क) इदम्

इदम् ऐसी सभी इच्छाओं का प्रणेता है जिसका नैतिकता, यथार्थता, सामाजिकता आदि से कुछ भी संबंध नहीं है। अपनी उच्छृंखल इच्छाओं की पूर्ति बिना किसी क्रम या व्यवस्था के करना चाहती है। इस दृष्टि से इदम् व्यक्तित्व का वह मूल अंग है, जो सभी प्राणियों के अविभाज्य, अवर्गीकृत और कालातीत शक्ति का स्रोत है।

(ख) अहम्

अहम् व्यक्ति की वह संस्था है जो बुद्धितत्व तर्क पर आधारित है। इसी से वह इदम् की पशु-प्रवृत्तियों पर नियंत्रण रख पाती है। किंतु अहम् स्वयं सर्वशक्ति संपन्न नहीं होता। यह उस आदि स्रोत पर ही निर्भर रहता है, निरंतर सक्रिय रहता है और दमित भावनाओं को चेतना में आने से रोकता है।

(ग) नैतिक मन

नैतिक मन व्यक्ति के पारिवारिक, सामाजिक, नैतिक एवं धार्मिक संस्कारों को विकसित करता है। नैतिक मन की अंकुश न केवल इदम् की आदिम और

दमित प्रवृत्तियों पर ही रहता है, अपितु अहम् पर भी रहता है। अस्तु इदम्, अहम् तथा नैतिक मन क्रमशः शारीरिक, भौतिक एवं सांस्कृतिक रूप से अनुकूलित रहते हैं।

3.5.4 अचेतन मन की कार्य पद्धतियाँ

अचेतन मन की कार्य पद्धतियाँ अज्ञात मन की रक्षा हेतु क्रियमाण होती है। बहिष्कृत इच्छाओं को अशांत मन की कार्य पद्धतियाँ वह रूप देती हैं जो उन्हें मान्य हो। काम भाव से निवृत्त कामाशक्ति इस कार्य पद्धति से वह रूप धारण कर लेती है जो अहम् से समन्वित हो। ये बिना परिमार्जित कामाशक्ति को बिलकुल नहीं आने देती।

(क) आरोपण (Projection)

आरोपण मन की एक गुप्त क्रिया है जो अवांछित दमन के कारण उत्पन्न होती है। इस क्रिया के प्रभाव में आकर मनुष्य अपने ही भावों का दूसरों पर आरोपण करता है। यह अचेतन मन की एक आत्मरक्षार्थ क्रिया है। यह आरोपण अव्यक्त और अनजाने होता चलता है। यह क्रिया 'स्थिर-भ्रमरोग' में विशेष रूप से चलती है।

(ख) विस्थापन (Displacement)

अचेतन मन अपनी दबी दबाई और कुंठित इच्छाओं को प्रकट करने केलिए विस्थापन कार्य पद्धति का प्रयोग करता है। इसमें आवश्यक विचार

अनावश्यक लगने लगता है। यह क्रिया अधिकतर स्वप्न और विक्षिप्तावस्था में चलती है।

(ग) संक्षिप्तिकरण (Contensation)

अचेतन मन की अनंत इच्छाओं को संक्षेप में प्रकट करने की यह एक क्रिया है। इसमें भावना ग्रंथियों की अभिव्यक्ति नहीं हो पाती। स्वप्न विश्लेषण या विक्षिप्तावस्था की क्रिया व्यवहारों का विश्लेषण करते समय इस पद्धति का पता चलता है।

(घ) तादात्म्य (Identification)

इस कार्य पद्धति में मनुष्य अपने अतीत के किसी दबे कुंठित विषय का किसी नये बाहरी विषय से ऐसा कल्पित संबंध स्थापित करता है कि इस नए विषय के प्रति उसके अंतर में वही भावना बन जाती है जो अतीत के उस मूल विषय के प्रति थी। यह क्रिया मानसिक चिकित्सा के समय रोगी के मन में प्रायः चला करती है।

(ङ) 'प्रतीकीकरण' (Symbolism)

इस कार्य पद्धति में अचेतन मन में दबी हुई इच्छायें प्रतीकों के रूप में प्रकट होती है। इनडोसाइकिक सेन्सर से बचने केलिए कामवासना के द्योतक प्रतीकों का प्रयोग अचेतन मन द्वारा किया जाता है।

(च) कल्पना क्रिया (Fantasy)

अचेतन मन की यह कार्य पद्धति युवावस्था में विशेष रूप से क्रियाशील रहती है और अनजाने रूप से विचार क्रिया को निर्धारित करती है। अधूरी आकांक्षाओं की पूर्ति मानव कल्पना-जगत् द्वारा करती है। किंतु अत्यधिक कल्पनालोक में भ्रमण करनेवाला विकृति का शिकार हो जाता है।

(छ) युकत्याभास (Rationlisation)

इस पद्धति के द्वारा मनुष्य अचेतन रूप से अपने किसी भी कार्य-विचार का युक्ति संगत कारण ढूँढ़ लेता है। जब किसी वस्तु की प्राप्ति की इच्छा उठती है और वह वस्तु प्राप्त नहीं होती तब यह कहकर संतोष कर लिया जाता है कि वह अच्छी नहीं है। इससे अचेतन मन अपने को अनुचित परिस्थिति में होने से बचा लेता है। जिससे अन्य व्यक्ति इसके प्रति तिरस्कार या मखौल का भाव न बना पाए। यह विधि भी आप्त रक्षार्थ है।

(ज) बद्धत्व (Fixation)

कुछ मानव ऐसे होते हैं जो अपने विगतावस्था को समय बीत जाने पर भी छोड़ना नहीं चाहते। वयस्क या प्रौढ़ जीवन को कठिनाई का सामना करने में वे अक्षम है। अतः बालक बनकर विगतावस्था से चिपके रहना चाहते हैं। इस प्रवृत्ति को बद्धत्व कहा जाता है। इसी प्रवृत्ति के शिकार अपनी पत्नी से माँ के जैसा व्यवहार चाहते हैं।

(झ) प्रत्यावर्तन (Regression)

इसी से मिलती-जुलती दूसरी क्रिया होती है जिसे प्रत्यावर्तन कहते हैं। इसमें मनुष्य समय के प्रवाह के साथ अगली अवस्था में बढ़ता जाता है, उसकी माँगों के अनुसार कार्य तत्परत्व अपने में लाता भी है। पर किसी अवसर विशेष में, विशेषतः किसी महान् संकट के अवसर पर वह पुनः बाल्यावस्था में लौट आता है।

(ञ) उदात्तीकरण (Sublimation)

प्रत्येक दमित इच्छा के साथ भावावेग भी लगा रहता है, जो अपने प्रवाह का मार्ग ढूँढ़ा करता है। इन भावावेगों को समाजानुमोदित नैतिक प्राणालियों से प्रवाहित होने की क्रिया को उदात्तीकरण कहा जाता है। कला प्रेम, साहित्य प्रेम, देश प्रेम, पशु-पक्षियों से प्रेम, ईश्वर प्रेम इत्यादि मानवीय लैंगिक प्रेम के उदात्तीकरण के रूप हैं।

(ट) स्थानांतरीकरण (Transference)

स्थानांतरीकरण मन की वह गुप्त क्रिया है। जिसके द्वारा मनुष्य एक व्यक्ति से संबंधित ईर्ष्या, द्वेष या प्रेम की भावना को दूसरे पर आरोपित कर देता है।

3.5.5 स्वप्न सिद्धांत

स्वप्न विज्ञान फ्रायड की एक मौलिक देन है। उनकी मान्यता है कि स्वप्न हमारी दमित वासनाओं की प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति है। स्वप्न के दो अंश होते

हैं- दिखावटी अंश और वास्तविक अंश। प्रथम तो वह है जिसे हम देखते हैं, याद कर सकते हैं, लोगों से वह सुन सकते हैं। परंतु दूसरा अंश साधारण लोगों की समझ के बाहर का है। इनकी वास्तविकता पहचानना ही मनोविश्लेषक का प्रमुख कर्तव्य है।

'डॉ.पद्मा अग्रवाल के अनुसार स्वप्न शब्द का अर्थ है अपने आप में रमण करना।'[8] युंग स्वप्न को एक साधारण मानसिक क्रिया मानते हैं। जिसमें दबी छिपी प्रवृत्तियाँ तथा जातीय विशेषताएँ प्रतीक रूप में अभिव्यक्त होती हैं।

अस्तु स्वप्न का मुख्य कारण मानसिक संघर्ष है। इस बात पर अधिकांश मनोवैज्ञानिक एक मत हैं कि स्वप्न का मुख्य कारण अचेतन और चेतन में होनेवाला संघर्ष है। हमारी दमित भावनाएँ ही स्वप्न के रूप में व्यक्त होती हैं।

3.5.6 कला की मूल प्रेरणा

प्राचीन काल में विज्ञान कलात्मक प्रतिभा को ईश्वरीय देन मानते थे। परंतु मनोविशलेषकों ने इसकी व्याख्या नए ढ़ंग से सामने रखी। उन लोगों ने कला का मूल आधार अचेतन मन को माना है।

फ्रायड का विचार है कि व्यक्ति के अचेतन मन की इच्छाएँ कलाकार की कल्पना का आधार होती है। फ्रायड के मतानुसार "खेलते हुए बालक की क्रिया और काव्य प्रक्रिया में पर्याप्त समानता है। क्रीडारत शिशु ठीक कल्पना प्रवण लेखक की भाँति व्यवहार करता है। वह अपने खेल को गंभीर रूप में ग्रहण करता है और बहुत अधिक भावनाएँ उसी में व्यय कर देता है। यथार्थ और

क्रीड़ा जगत् में वह पूर्ण विभेद कर देता है। कवि भी बालक के समान मनःसृष्टि करता है और उसे गंभीरता पूर्वक स्वीकार करता है। अर्थात् तीव्र रूप से उसे यथार्थ से विमुख करता हुआ उसमें बहुत-सी भावनाएँ अभिनिविष्ट कर देता है।"[9]

अस्तु फ्रायड के अनुसार कला व्यक्ति की दमित भावनाओं की अभिव्यक्ति है। "पीड़ा से रक्षा करने का अन्य उपाय मानसिक साधनों के अनुसार राग-विपर्यय की क्रिया है जिसके द्वारा परिवर्तनशीलता प्रचुर अंशों में प्राप्त होती है। तब समस्यावृत्ति मूलक उद्देश्यों को ऐसी दिशाओं में परिणित करने की है, जहाँ बाह्य जगत् उन्हें कुंठित न कर सकें। वृत्तियों के उन्नयन से इसमें सहायता मिलती है। इस स्थिति में यह सबसे अधिक सफल होती है जबकि कोई मनुष्य मानसिक और बौद्धिक कार्यों से आनंद प्राप्त करने की विधि जानता हो।"[10] अस्तु कला व्यक्ति के अचेतन में दमित कामवासनाओं का उदात्तीकरण रूप है।

3.5.7 कला की मूल क्षति पूर्ति का सिद्धांत (एडलर)

एडलर भी कला का संबंध अज्ञात मन से स्थापित करता है। किंतु वह फ्रायड के समान दमित काम वासनाओं को कला की मूल प्रेरणा स्वीकार नहीं करता। उसके विचारानुसार मनुष्य में सबसे प्रमुख प्रवृत्ति काम न होकर आत्मसम्मान की है। व्यक्ति अपने आत्मसम्मान को बनाए रखने केलिए सभी कामों को करता है। जब व्यक्ति किसी एक क्षेत्र में सम्मान नहीं प्राप्त कर पाता है तो वह उसकी पूर्ति किसी अन्य क्षेत्र में अपनी योग्यता दिखलाकर पाने की चेष्टा करता है। अतः उनके विचार से 'कला के मूल में क्षति पूर्ति का सिद्धांत कार्य करता है।

उनका स्थाई लक्ष्य शारीरिक असमर्थताओं तथा अन्य कारणों से शैशव में ही उत्पन्न ग्रंथि के निराकरण के उद्देश्य से अपनी महत्ता की स्थापना के प्रयत्नों से निर्मित होता है। साहित्य और कला इसी प्रकार हीनता के भावों की क्षतिपूर्ति के साधन हैं। उनके द्वारा कलाकार दूसरों के हृदय पर प्रभुत्व स्थापित कर हीनता भाव जन्य अपनी सत्ताकांक्षा की तृप्ति करता है।'[11]

3.5.8 रचनात्मक वृत्तिकला की मूल प्रेरणा (युंग)

युंग ने कला के संबंध में अपने मौलिक विचार प्रकट किए हैं। "असृष्टिकृत कलाकार की आत्मा में एक प्राकृतिक शक्ति होती है जो निरंकुश शक्ति या कुशल सूक्ष्मता से अपने उद्देश्य को जिसे प्रकृति अपने लक्ष्य की सिद्धि केलिए रचनात्मक आवेग के वाहक सुख-दुख से निरपेक्ष होकर तैयार करती है। मनुष्य में रचनात्मक आवेग मनुष्य के भीतर उसी प्रकार रहता है और विकसित होता है। जिसप्रकार वृक्ष चारती में रहकर अपना पोषक तत्व ग्रहण करता है और विकसित होता है। इसप्रकार रचना प्रक्रिया को मनुष्य की आत्माओं से संलग्न एक जीवित वस्तु मानना उचित होगा। मनोविश्लेषण की शब्दावली से यह एक स्वतंत्र मनोग्रंथि है। वस्तुतः यह चेतना का एक अविच्छिन्न अंश है जो चेतना क्षेत्र से हटकर स्वतंत्र मानसिक जीवन निर्वाह करता है और अपनी शक्ति के मूल्य या बल की दृष्टि से स्वचालित चेतना प्रक्रिया में व्यवधान उत्पन्न कर सकता है। अथवा 'स्व' को अपनी सेवा में से रोकनेवाली विधानोत्तर योग्यता के रूप में दिखाई दे सकता है।"[12] इस अध्ययन से फ्रायड तथा एडलर से युंग का मत तर्क संगत लगता है।

3.6 गेस्टाल्टवादी संप्रदाय (संपूर्णतावादी संप्रदाय)

जर्मन शब्द 'गेस्टाल्ट' का अर्थ है-'समग्रता'। गेस्टाल्टवादी मन में नहीं संपूर्ण विश्व में संपूर्णात्मकता दिखते हैं। इस संप्रदाय का सिद्धांत है कि अनुभूत विषयों, उनके गुणों और परिवर्तनों का अस्तित्व स्वतंत्र नहीं वरन् अनुभवकर्ता प्राणी के भीतर होनेवाली जटिल प्रक्रियाओं का फल है।

इस संप्रदाय के जन्मदाता बरदाइमर के चक्षुष प्रत्यक्ष्य ज्ञान संबंधी प्रयोगों के आधार पर गेस्टाल्ट को समझा जा सकता है। एक प्रयोग कीजिए इस तरह के तीन बिंदुओं को देखिए। वे तो हैं, तीन बिंदु मात्र ही और उनके बीच में रिक्त स्थान भी है। पर आप क्या वहाँ तीन बिंदुओं को न देखकर एक व्यवस्थित त्रिकोण को नहीं देख रहे हैं। इस संप्रदाय के प्रमुख प्रणेता बरदाइमर कुर्टलेविन, काफ़का आदि हैं।

गेस्टाल्ट के कुछ प्रमुख सिद्धांत इस प्रकार हैं-

(1) समरूपता का सिद्धांत
(2) सूझ का सिद्धांत
(3) क्षेत्र का सिद्धांत
(4) रिक्त पूर्ति का सिद्धांत
(5) आकार एवं पृष्ठभूमि का नियम
(6) सामीप्य का नियम

(1) समरूपता का सिद्धांत

यह गेस्टाल्ट के प्रमुख सिद्धांतों में से एक है। इसके अनुसार जिस कार्य-कलाप को जीव देखता है अथवा निरीक्षण करता है, उसमें इस सिद्धांत का प्रभाव मिलता है। पूर्णाकार मनोविज्ञान में समरूपता का अर्थ कर्मण्यता, मस्तिष्क प्रदेश तथा चेतन अंतर्वस्तु में संरचनात्मक अनुरूपता अथवा संवादिता है।

(2) सूझ का सिद्धांत

काफ्का ने अंतर्दृष्टि विधि का तथा प्रयास एवं त्रुटि विधि का विरोध किया। उनका कथन है कि शिक्षण यांत्रिक प्रक्रिया नहीं है, वरन् प्रयास त्रुटि विधि में भी सूझ का उपयोग होता है।

(3) क्षेत्र का सिद्धांत

मानव व्यवहार की व्याख्या केलिए कुर्टलेविन ने क्षेत्र सिद्धांत का प्रतिपादन किया। उनके इस सिद्धांत पर भौतिक विज्ञान के क्षेत्र सिद्धांत का प्रभाव पड़ा। भौतिक विज्ञान के क्षेत्र का सिद्धांत यह बताता है कि कोई भी भौतिक क्षेत्र विद्युत-चुम्बकीय तथा गुरुत्वाकर्षण शक्तियों का जाल है और उस क्षेत्र में निहित पिण्डों पर शक्तियाँ प्रभाव डालती हैं। लेविन के मतानुसार क्रिया संवेग तथा व्यक्तित्व के क्षेत्र में क्षेत्र सिद्धांत लागू होता है। इसके मुख्य नियम इस प्रकार हैं- आचरण की व्याख्या सहवर्ती तथ्यों का स्वरूप एक गतिमान क्षेत्र के अनुसार होता है, जिसको किसी भाग की व्याख्या दूसरे भागों पर निर्भर करती है।

(4) रिक्त पूर्ति का सिद्धांत

रिक्त पूर्ति का सिद्धांत यह बताता है कि एक बंद आकृति अंतराल युक्त अनियमित आकृति की बराबरी में अधिक आकर्षक होती है। मनुष्य में अंतरालों को भरने की एक स्वाभाविक प्रवृत्ति होती है। मनुष्य यदि किसी काम को करने ठानता है तब उसको पूरा करने तक उसके मन में तनाव बना रहता है। वह तनाव तभी खत्म होता है जब वह काम पूरा होता है।

(5) आकार एवं पृष्ठभूमि का नियम

इस नियम के अनुसार हम केवल संपूर्ण आकार ही नहीं वरन् इन आकारों की पृष्ठभूमि पर उभरा हुआ देखते हैं, क्योंकि प्रत्यक्षीकरण का स्वरूप भी वही है, जो ध्यान का है, अर्थात् प्रत्यक्षीकरण चयनात्मक एवं चंचल है तथा इस पर हमारी आदतों एवं अतीत अनुभवों का प्रभाव पड़ता है। प्रत्यक्षीकरण की चंचलता के कारण कभी आकार पृष्ठभूमि में और पृष्ठभूमि आकार में बदलता रहता है।

(6) सामीप्य का नियम

वह उत्तेजना जो आपस में एक दूसरे के निकट होती है साथ ही दिखाई देती है जबकि वस्तुएँ जो एक-दूसरे से दूरी पर होती है वे अलग-अलग देखी जाती हैं, जैसे तीन बिंदुओं को त्रिकोण की स्थिति में रखने पर तीन बिंदु न देखकर एक संपूर्ण त्रिकोण में देखता। यह नियम केवल दृष्टि संवेदना तक सीमित नहीं है वरन् अन्य संवेदनाओं आदि पर भी लागू होता है।

3.7 व्यवहारवादी संप्रदाय (आचरणवादी)

इस संप्रदाय का मूल उद्देस्य मनोविज्ञान को प्राकृतिक विज्ञान बना देना है, जो उत्तेजना ज्ञात होने पर प्रतिक्रिया का यथार्थ पूर्वानुमान कर सके कि यह किस उत्तेजना के कार्यस्वरूप हुई है। इसकेलिए मनेविज्ञान को केवल प्रेक्ष्य तथ्यों तक सीमित रखना आवश्क समझा गया है। व्यवहारवादियों का विचार है कि वैज्ञानिक प्रेक्षण वही है जो कई प्रेक्षकों द्वारा किया जा सके और सभी एक ही निष्कर्ष पर पहुँचे। ऐसा प्रेक्षण केवल बाहर से ही हो सकता है। अतः उन्होंने आग्रह किया कि चेतना अप्रेक्ष्य है और मनोवैज्ञानिकों केलिए चेतना का भ्रम त्यागना आवश्यक है। इस प्रकार अंतःप्रेक्षण भी व्यर्थ हो जाता है। 'लैशले' ने तो अंतःप्रेक्षण द्वारा ज्ञात समझे जानेवाले तथ्यों को अस्वीकार करते हैं अथवा कम-से-कम इन्हें सार्वजनिक एवं तथ्यात्मक अध्ययन द्वारा अप्राप्य होने के कारण वैज्ञानिक अनुसंधान के अयोग्य घोषित करते हैं। उनकेलिए चेतना अथवा अनुभव महत्वहीन धारणाएँ हैं। मनोविज्ञान का यथार्थ उद्देश्य किसी जीव पर टकरानेवाली उत्तेजनाओं और उस जीव की प्रतिक्रियाओं के संबंधों का ही अध्ययन है।

व्यवहारवादी संप्रदाय मुख्यतः अमेरिका में पनपा। वाट्सन इसके अग्रणी थे। मानव और जंतु के व्यावहार की तुलना, आगमनात्मक पद्धति का प्रयोग, प्रतिक्रिया और उत्तेजना सिद्धांत, मानव व्यवहारों का वर्गीकरण, चिह्न सार्थक सिद्धांत आदि व्यवहारवादी सिद्धांत के आचार्यों का प्रमुख विचार हैं।

3.8 वातावरणवादी संप्रदाय

प्राचीन काल में आनुवंशिकता को अत्यधिक महत्व प्रदान किया जाता था। लोगों को यह मान्यता थी कि माता-पिता के अनुरूप ही संतान होती है। 'बबूर के पेड़ में आम नहीं फलते' जैसी उक्तियाँ पूर्ण आत्मविश्वास के साथ प्रस्तुत की जाती हैं। आधुनिक युग के मनोवैज्ञानिकों ने अनुभव किया कि कोई व्यक्ति कितने ही अच्छे कुल में क्यों न उत्पन्न हो, यदि उसे उपयुक्त वातावरण नहीं मिल पाया तो वह कभी भी महान् व्यक्ति नहीं बन सकता। व्यक्ति के आंतरिक गुणों का विकास उपयुक्त वातावरण पर उसी प्रकार निर्भर है जिस प्रकार उर्वर बीज के फलने केलिए समुचित धूप, पानी, खाद और सुयोग्य माली की। इसी आधार पर कुछ मनोविज्ञान वेत्ताओं ने वातावरणवादी सिद्धांत को जन्म दिया। वाट्सन ने वास्तव में यह घोषणा की थी- "मुझे एक दर्जन स्वस्थ सुगठित शिशु पालने को दिए जाएँ और मैं उनमें से किसी को चिकित्सक, वकील, कलाकार, सौदागर, भिखारी, चोर जो चाहे बना सकने का दावा करता हूँ। चाहे उनके कोई भी प्राकृतिक गुण, झुकाव, योग्यताएँ हों या न हों, चाहे उनके पूर्वज किसी भी जाति के हों। उनका विश्वास था कि यदि किसी व्यक्ति के परिवेश के पूर्ण नियंत्रण की सुविधाएँ हमें प्राप्त हों तो हम उपयुक्त परिवेश, नियंत्रण से उसे जो चाहे बना सकते हैं तथा जो चाहे सिखा सकते हैं।"[13]

मेण्डल, गाल्टन, लेमार्क, डारविन आदि मनोवैज्ञानिकों ने भी वंशानुक्रम को ही अधिक महत्व दिया है। किंतु यह भी पाया जाता है कि एक ही माता-पिता की संतानों में अंतर होता है। यह अंतर कई पीढ़ियों के मातृ एवं पितृ सूत्र के कारण भी हो सकता है और वातावरण भिन्नता के कारण भी।

3.9 साहित्य और मनोविज्ञान का संबंध

साहित्य के मूल में भावनाओं की प्रेरणा होती है। इसलिए साहित्य को भावों की समष्टि भी कहा जाता है। भावनाओं का अभिव्यक्ति केलिए लेखक को विचार, कल्पना और बुद्धि का यथोचित उपयोग करना ही पड़ता है। भावों और मनोभावों का अध्ययन मनोविज्ञान से सीधा संबंध रखता है। विचार, कल्पना एवं बुद्धि का उपयोग, भावों की समुचित ढंग से अभिव्यक्ति हो इसलिए किया जाता है। परिणामस्वरूप विचार, कल्पना एवं बुद्धि का मनोविज्ञान से साहित्य के क्षेत्र में संबंध होना आवश्यक माना जा सकता है। जिस साहित्य में इनका आंतरिक संबंध उचित ढंग से प्रस्थापित नहीं हो जाता वह साहित्य श्रेष्ठ साहित्य नहीं हो सकता।

साहित्यकार को मनोविज्ञानवेत्ता ही होना चाहिए। ऐसी कोई शर्त नहीं है। ऐसा होता तो सारे मनोवैज्ञानिक श्रेष्ठ साहित्यकार हो जाते। परंतु साहित्यकार को मानव मन की जानकारी होना आवश्यक है। क्योंकि साहित्य आखिरकार मन को प्राभावित करनेवाला होता है।

मानव मन और अनुभूति इनका अटूट संबंध है। मन को जब अनुभूति होती है, तभी भावनाओं का आरोह-अवरोह शुरू होता है। इन अनुभूतियों की सहज कलात्मक अभिव्यक्ति साहित्य में होती है। प्रारंभ में यह अनुभूति लेखक या कवि की व्यक्तिगत अनुभूति हो सकती है। परंतु जब वह साहित्य के माध्यम से अभिव्यक्त होती है तो वह जन-मन की अभिव्यक्ति बनने की क्षमता रखती है। साहित्य जनमन की अनुभूतियों की सहज कलात्मक अभिव्यक्ति है। मनोविज्ञान

इसका वैज्ञानिक अनुशीलन करता है। इस संदर्भ में एफ.एल.लुकास का कथन द्रष्टव्य है कि "कला सभी संबंधों को रूपों में भाव भरती है और भावों को रूप देती है।"[14]

मानव का प्रत्येक कार्य प्रेरित होता है। उसे वह प्रेरणा मन से ही मिलती है। साहित्य लेखन भी एक प्रेरणा ही है। इसलिए उसका संबंध मन से रहना स्वाभाविक ही नहीं तो आवश्क भी है। अतः उसकी सृजनात्मक क्रिया को समझने केलिए उसके मानसिक ढाँचे और उसकी मानसिक क्रिया का अध्ययन आवश्यक है। इस संदर्भ में फ्रायड, युंग एवं एडलर जैसे मनीषियों का जो कथन है वह अत्यंत महत्वपूर्ण है। "फ्रायड ने विरेचन को, युंग ने सामूहिक अवचेतन को, एडलर ने मानसिक विवशता को साहित्य निर्मिति का कारण माना है। हीगल ने मानव के जन्मजात सौंदर्य प्रवृत्ति को साहित्य की मूल प्रेरणा माना है।'[15]

रिचार्डस् ने "साहित्य का उद्देश्य मन की वृत्तियों को संगठित कर उनमें सामंजस्य स्थापित करना बतलाता है।"[16]

डॉ.श्यामसुंदरदास साहित्य में भाव या मनोवेग को ही सब कुछ मानते हैं। उनका कथन है कि "मनुष्य के भाव और विचार तथा उसकी कल्पनाएँ भी बड़ी विचित्र और अनोखी हुआ करती हैं। साहित्य मनुष्य के इन्हीं विचित्र भावों विचारों तथा कल्पनाओं का व्यक्त रूप है।"[17]

डॉ.गुलाबराय भी मानते हैं कि "मानव के भावों, विचारों एवं संबंधों की आत्मकथा साहित्य के रूप में प्रसारित होती है।"[18]

डॉ.नगेंद्र भी जीवन की अन्य अभिव्यक्तियों की भाँति साहित्य को भी एक विशेष प्रकार की अभिव्यक्ति मानते हैं।"[19]

आचार्य रामचंद्र शुक्ल के मत में साहित्य का उदात्त रूप है- "रागों या मनोवेगों का परिष्कार करते हुए उनका सृष्टि के साथ उचित सामंजस्य स्थापित करना।"[20]

साहित्य की परिभाषाओं के बारे में अनेक विद्वानों के विचारों को देखते हुए इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि साहित्य में भाव, विचार और कल्पना को विशेष महत्व प्रदान किया गया है। भाव, विचार और कल्पनाओं को मनोविज्ञान में अत्यंत मौलिक स्थान है। अतः भाव, विचार और कल्पना का मनोवैज्ञानिक अर्थ जानलेना आवश्यक है।

भाव

भाव को अंग्रेज़ी में इमोशन कहते हैं। श्री.पी.टी युंग महोदय के अनुसार इमोशन की व्युत्पत्ति लैटिन के ई-मूवर (E-movere) से हुई है, लैटिन 'ई' का अर्थ 'बाहर' और मूवर का अर्थ है-'गतिशील होना'। इस प्रकार इमोशन का व्युत्पत्तिजन्य अर्थ होता है-'बाहर निकलना' या 'निष्कासित होना'।"[21] वस्तुतः इमोशन का संबंध मानसिक गति, उत्तेजना या चंचलता से है। जब हमारे मन में किसी कारण उदीप्त होती है तो व्यापक अर्थ में इसे 'इमोशन' कह सकते हैं। भाव को कुछ विद्वान संवेग कहते हैं। ये मनुष्य के बहुत से कार्यों के प्रेरक हैं।

भावहीन जीवन नीरस और आकर्षणहीन होता है। भावों से व्यक्ति को परिस्थिति के प्रति अनुक्रिया करने की प्रेरणा मिलती है। यह सभी के अनुभव की बात है कि भावावस्था में शक्ति संचालन (mobilisation) बढ़ जाता है।

भावावस्था में कुछ समय केलिए व्यक्ति पर बुद्धि का नियंत्रण हट जाता है। इस प्रकार का भावात्मक असंतुलन शरीर और मन केलिए बड़ा हानिकारक है। भावों पर नियंत्रण करने केलिए उनका दमन भी हानिकारक है। मनोविश्लेषणवादियों ने इस दमन के फलस्वरूप होनेवाले मानसिक रोगों का विस्तृत विवेचन किया है। फ्रायड तो दमित भावों की अभिव्यक्ति को ही कला मानते हैं। भावों की दशा में अनेक आंतरिक और बाह्य शारीरिक परिवर्तन होते हैं।

उपन्यास और कहानी में भी किसी पात्र की भावावस्था का वर्णन करते समय इसका परिचय आवश्यक होता है। अनुभव तथा व्यवहार में भावों का कार्य जितना महत्वपूर्ण है उतना ही उनका नियंत्रण भी कठिन है। आवश्यकता इस बात है कि भावों को दबाया या निकाला न जाए उनका रूपांतर या उदात्तीकरण करके उपयोगी दिशाओं में मोड़ दिया जाए अथवा उनको शांत किया जाए। साहित्य से ये कार्य हो ही जाते हैं। इस प्रकार भाव का प्रयोग सामान्यतः एक ओर विशेष प्रकार की भावात्मक अनुभूतियों केलिए होता है तो दूसरी ओर व्यापक अर्थ में भाव से संबंधित सभी प्रकार के मानसिक एवं शारीरिक क्रिया-व्यापारों को इसके अंतर्गत स्थान दिया जाता है।

भाव के संकीर्ण अर्थ की उपेक्षा व्यापक अर्थ को ग्रहण करना 'साहित्य और मनोविज्ञान' के संबंध को दिखाते हुए अनिवार्य हो जाता है। व्यापक अर्थ

में भाव के अंतर्गत विभिन्न प्रकार की ऐसी अनुभूतियों एवं मानसिक दशाओं का समावेश किया जाता है जिनमें भाव का अस्तित्व किसी न किसी मात्रा में होता है। इन्हें सूक्ष्म दृष्टि से अनेक भेदों में विभक्त किया जाता है- जैसे अनुभूति, संवेग या भाव, मनःस्थिति, भावना, स्वभाव, भावात्मक दृष्टिकोण आदि। इनका संक्षिप्त परिचय नीचे दिया जाता है।

(क) अनुभूति (feeling)

अनुभूति और भाव में परस्पर घनिष्ठ संबंध है। दोनों में सुख और दुःख दोनों पाए जाते हैं। सुख, दुःख, भय, क्रोध, प्रेम और उल्लास आदि को अनुभूति भी माना जाता है और भाव भी। परंतु भाव और अनुभूति में इतना घनिष्ठ संबंध होते हुए भी उनमें थोड़ा-सा अंतर है। ऐंद्रिक संवेदनाओं के कारण मन पर जो प्रतिक्रिया होती है, उन्हें अनुभूति कहा जाता है। भाव अनुभूति से अधिक जटिल होता है। उसकी उत्पत्ति केवल परिस्थिति से नहीं बल्कि किसी परिस्थिति की स्मृति या कल्पना से भी हो सकती है। इस प्रकार भाव और अनुभूति में मानसिक दृष्टि से अंतर है।

भाव में शरीर का कुछ ग्रंथियाँ विशेष रस का स्राव करती हैं। अनुभूति में इस प्रकार का भाव नहीं होता। अनुभूति से भाव की अपेक्षा अधिक स्नायविक उद्दीपन (Neural excitment) होता है। भाव में किसी विशेष दिशा में क्रियाशील होने की प्रवृत्ति भी आ जाती है। भाव अनुभूति से अधिक उग्र होता है। अनुभूति कभी भी भाव के समान उत्तेजनापूर्ण नहीं होती। अनुभूति सघन और विस्तृत होने पर भाव को जन्म दे सकती है तो भाव की उद्दीप्ति के कारण किसी न किसी प्रकार की अनुभूति भी होती है।

(ख) मनोदशा (Mood)

अनुभूति का सघन रूप भाव है तो भाव का सघन और अधिक स्थिर रूप मनोदशा है। मनोवैज्ञानिकों के अनुसार "मनोदशा भाव का स्थिर रहनेवाला पश्चात प्रभाव है। भाव मनोदशा के रूप में स्थिर रहता है। वह एक सजातीय मनोदशा को अपने पीछे छोड़ जाता है। भाव मनोदशा का कारण है। मनोदशा भाव का अपेक्षा कम तीव्र होती हैं किंतु उसका स्थिति काल अधिक दीर्घ होता है।"[22] अतः मनोदशा और भाव में परस्पर गहरा संबंध सिद्ध होता है।

(ग) भावना (Sentiment)

भावना किसी वस्तु पर केंद्रित भावात्मक प्रवृत्तियों की एक सुव्यवस्थित समष्टि है। मैक्डुगल महोदय ने लिखा है- "भावना किसी आलंबन के संपर्क से उत्पन्न उसके प्रति एक स्थाई चेष्टात्मक अभिवृत्ति है।"[23] भावना एक अर्जित प्रवृत्ति है जिसका निर्माण धीरे-धीरे कई अनुभवों और क्रियाओं से होता है। भाव भावनाओं के रूप में व्यक्त होता है। अतः दोनों अन्योन्याश्रित है। इस संदर्भ में मैक्डुगल महोदय का कथन उल्लेखनीय है- "भाव अनुभाव का एक प्रकार , कार्य की प्रणाली और क्रिया की एक विधि है। भावना संरचना एक तथ्य, स्नायु-विन्यासों की एक संगठित अवस्था है जो कि कार्य करने के बीच में न्यूनाधिक शांत दशा में रहती है। व्यक्तियों और समाज के चरित्र और आचार केलिए भावना का विकास सबसे अधिक महत्व है, वह भावात्मक और संकल्पात्मक जीवन का संगठन है।"[24]

(घ) भावात्मक दृष्टिकोण (Attitude)

दृष्टिकोण या अभिवृद्धि एक मानसिक या स्नायविक तत्परता, संगठन अथवा विन्यास है जिसमें प्रेरणात्मक, भावनात्मक, प्रत्यक्षात्मक और विचारात्मक प्रक्रियाएँ सम्मिलित है और जिसके कारण व्यक्ति के चारों ओर की वस्तुओं, व्यक्तियों अथवा समूह की ओर उसकी सकारात्मक या नकारात्मक प्रक्रिया निर्देशित होती है। दृष्टिकोण कुछ प्रतिमाओं, विचारों या बाह्य वस्तुओं से संबंधित होता है।

जब कोई विचार, सिद्धांत या किसी व्यक्ति के संबंध में हमारी धारणा पुष्ट एवं विकसित भावना के रूप में परिणित हो जाती है तो उसे मनोवैज्ञानिक दृष्टि से 'दृष्टिकोण' या 'भावानात्मक दृष्टिकोण' कहते हैं। कुछ मनोवैज्ञानिकों ने इन्हें भावनाओं से अभिन्न माना है। वस्तुतः बौद्धिक विषयों से संबंधित भावनाएँ ही दृष्टिकोण कही जाती हैं।

(ङ) स्वभाव (Temperament)

जब विभिन्न भावनाएँ हमारे चरित्र की स्थायी अंग बन जाती हैं तो इन्हें ही स्वभाव कहा जाता है। अतः अनुभूति, मनोदशा, भावना, दृष्टिकोण, स्वभाव आदि भाव के ही उत्तरोत्तर अधिक स्थिर एवं व्यवस्थित रूप हैं। इनमें से प्रत्येक रूप व्यक्त होने पर भाव में परिणित हो सकता है।

(च) विचार (Thinking)

विचार समस्या के प्रति अनुक्रिया के रूप में आरंभ होता है और उससे समस्या का सुझाव निकालता है। वैसे दैनिक बोलचाल की भाषा में चिंतन का अर्थ सोचने, समझने, कल्पना करने, विचार-विमर्श करने आदि से लिया जाता है, परंतु मनोवैज्ञानिक विचार को एक जटिल मानसिक प्रक्रिया मानते हैं।

मनोवैज्ञानिकों ने विचार की परिभाषा करते हुए लिखा है – "विचार मन की वह प्रक्रिया है जिसमें हम पुराने अनुभव को वर्तमान समस्याओं के हल करने में काम लाते हैं।"[25]

विचार की मानसिक प्रक्रिया को श्री वृडवर्थ महोदय ने पाँच अंगों में विभाजित किया है-(१) किसी लक्ष्य या समस्या की ओर उन्मुख होता (२) लक्ष्य प्राप्ति केलिए इधर-उधर मार्ग ढूँढ़ना (३) पूर्व निरीक्षित तथ्यों या अनुभवों का स्मरण (४) स्मृत तथ्यों या अनुभवों का नई परिस्थिति के अनुसार उपयोग और(५) आंतरिक भाषण या मुद्राएँ।

विचार की प्रक्रिया में प्रत्ययों (प्रिपोसिशन्स), प्रतिमाओं (इमेजस), प्रत्ययों (कन्सनेंट्स), चिह्नों (साइन्स) और सूत्रों (फॉरमुला) की सहायता ली जाती है। इसी आधार पर विचार के प्रत्यक्षात्मक विचार, कल्पनात्मक विचार और प्रत्ययात्मक विचार ऐसे विचार के तीन प्रमुख स्तर भेद किए जाते हैं। इनमें प्रत्ययात्मक विचार मनोवैज्ञानिकों की दृष्टि से ज़्यादा महत्व माना जाता है।

(छ) कल्पना (Imagination)

साहित्य में भाव के बाद विचार की अपेक्षा कल्पना का विशेष महत्व माना जाता है। फेडरिक परस्कॉट कल्पना को मन की आँख मानते हैं। कल्पना एक ऐसी मानसिक शक्ति है जो वस्तुओं की अनुपस्थिति में या अप्रत्यक्ष पदार्थों के विषय में चिंतन-मनन करती है।

कल्पना और स्मृति में भी घनिष्ठ संबंध है। स्मृति पुनरुत्पादन है और कल्पना पूर्वानुभवों को मानसिक प्रहस्तन करके उनको नया रूप देता है।

साहित्य के क्षेत्र में भाव, विचार और कल्पना का जो उपयोग होता है वह मनोविज्ञान पर ही आधारित है। इसलिए उनका साहित्यिक विश्लेषण देखने के बाद उनका मनोवैज्ञानिक विश्लेषण भी संक्षेप में देखना भी अनिवार्य हो जाता है। जिसके फलस्वरूप साहित्य और मनोविज्ञान के घनिष्ठ संबंध को और अधिक स्पष्ट रूप से समझने में सहायता मिल सकती है। मनोवैज्ञानिक सैद्धांतिक एवं वैज्ञानिक पद्धति से व्यक्त करते हैं तो साहित्यिक शब्दों के माध्यम से, शैली के माध्यम से और रचना के माध्यम से अभिव्यक्त करते हैं।

3.10 साहित्य और मनोविज्ञान के उद्देश्य

साहित्य का उद्देश्य या प्रयोजन के संदर्भ में शुरू से लेकर अब तक इतना विचार-विमर्श हुआ है कि उसकी सीमा को शब्दों में बाँधना असंभव-सा प्रतीत हो रहा है। साहित्य निर्मिति का उत्स आंतरिक मन है। उसे हम अचेतन मन भी कह सकते है। इसलिए अचेतन मन से निर्माण होनेवाला साहित्य अचेतन मन को

ही प्रभावित करता है। फलस्वरूप उसके उद्देश्य को स्पष्ट करना कठिन ही है। फिर भी अनेक आलोचक उसके उद्देश्य को स्पष्ट करते आ रहे हैं। एफ.एल.लुकास का कथन है-''कला शायद उद्देश्यहीन हो सकती है परंतु प्रभावहीन या परिमाणहीन नहीं हो सकती।''[26]

किसी भी मनुष्य के मानसिक संवेगों, आंतरिक अनुभूतियों,अतृप्त वासनाओं,दिवास्वप्नों और असामान्य व्यवहार के विश्लेषणपरक अध्ययन को 'मनोविज्ञान' की संज्ञा दी जाती है। कतिपय चरित्र अंतर्मुखी प्रवृत्ति के होते हैं और कतिपय चरित्र बहिर्मुखी प्रवृत्ति के। मनोविज्ञान सामान्य जन के चिंतन, व्यवहार और संवेगों का अध्ययन करता है अथवा विचित्र और अव्यवहारिक मनोवृत्ति के पात्रों का। मनुष्य के विक्षुब्ध होने अथवा उदात्त बने रहने के पीछे कुछ अनुवांशिक प्रभाव होते हैं और कुछ प्रभावजन्य विशेषता होती है। प्रत्येक रचनाकार अपने मानसिक अभावों की पूर्ति कला-जगत् के संसार में करता है। वह अपने व्यक्तित्व की अपूर्णता या लघुता को किसी पात्र-विशेष में पूर्णता या असीमित भाव में देखना चाहता है। समकालीन साहित्य में लिबिडो, इडिपस ग्रथि, हीन मनोग्रंथि, उच्च मनोग्रंथि, अंतः प्रज्ञा, अंतश्चेतना का आधार बनाकर विश्लेषणपरक अध्ययन अधिक नहीं हुए हैं।

साहित्य अपनी युगीन परिस्थितियों की उपज होता है, जो विषयवस्तु बनकर साहित्य में आती है, आवश्यकतानुसार वादों,प्रतिवादों या संवादों (Thesis Antithesis and Synthesis) के परिप्रेक्ष्य में उसका मूल्यांकन करते हैं। राजेंद्र यादव के शब्दों में ''कला-सर्जना, कलाकार की मानस प्रक्रिया से ढलकर रूप

लेती है वह इस संसार के समानांतर स्वतंत्र सृष्टि ही तो है.... स्वतंत्र सृष्टि अर्थात् निर्माण और संघटन के अपने नियमों, परंपराओं से प्रेरित-परिचालित.... कलाकार इसकेलिए मिट्टी भले ही इस वस्तु संसार से लेता हो,रूप उसका वह अपने ही स्वप्नों, स्मृतियों, आवश्यकताओं, दबावों, कुंठाओं और दृष्टियों के अनुरूप देता है।" युंग ने तो "मानव के अवचेतन सम्भाग को सृजन-शीलता की कृति कहा है,जिसके माध्यम से समूची मानव-जाति के सौंदर्य एवं समृद्धि का मार्ग प्रशस्त हुआ है और इसलिए युंग ने इस सृजनात्मक शक्ति के मूलाधार अवचेतन सम्भाग को वैयक्तिक चेतना की अपेक्षा अधिक प्रभावकारी एवं महत्वपूर्ण माना है।"[27] समकालीन साहित्य में मनोविज्ञान के विभिन्न तत्व पाए जाते हैं। हिंदी के प्राचीन तथा आधुनिक रचनाकारों में इसका थोड़ा अभास मिलता है। अपनी रचनाओं में प्रयुक्त उस नज़रिए को मानव मन को परखनेवाली उनकी प्रतिभा का द्योतक मानना ही उचित होगा।

3.11 मनोविज्ञान का उद्देश्य

मनोविज्ञान का उद्देश्य मानव मन की क्रिया को उद्घाटित करना ही है। मनोवैज्ञानिक साहित्यकार की तरह कला का उपयोग करके मानव मन या चरित्र का स्पष्टीकरण न करके एक वैज्ञानिक की तरह उसका सूक्ष्म निरीक्षण एवं व्यवस्थापन करता है।

साहित्य या कलाकृति का आस्वादन सामाजिक, सुसंकृत या रसिक व्यक्ति ही कर सकता है जो इसके प्रशिक्षण, अध्ययन,मनन और विवेचन की लंबी प्रक्रिया का अभ्यस्त हो। मनोविज्ञान अपने विश्लेषण की तहों को गंभीरतापूर्वक

ही आरोपित कर सकता है। यह चेतन और अवचेतन, प्रकट और अप्रकट, अभिव्यक्त और अनभिव्यक्त गोपन रहस्यों का माइक्रोस्कोपी अध्ययन है। यह विरेचन-चिकित्सा न होकर रचनाकार के सृष्टा बनने और कलाकृतियों के सृष्ट होने, रचे जाने का आघोषित तिलस्मी रहस्य भी है।

स्पष्ट है कि साहित्य में निहित आनंद को, मनोविज्ञान के ज़रिए घोषित कर सकते हैं। एडलर भी अपने क्षतिपूर्ति सिंद्धांत से अंतर्गत साहित्य और कला को अपने प्रकृत रूप में स्वस्थ पूर्ति का साधन मानते हैं। युंग के अनुसार "मानव में जीवित रहने की ही नहीं अमर रहने की भी प्रबल इच्छा एवम् सहज आकांक्षा है। यही जीवनेच्छा व्यक्ति को अमर कर देनेवाले कार्यों में प्रवृत्त करती है, साहित्य मूल में युंग की दृष्टि में यही अमर होने की इच्छा कार्य कर रही है। मानव का व्यक्तित्व ही इस सर्जन के स्वरूप का नियंत्रण है। यही कारण है कि प्रभुत्व की कामनावाले बहिर्मुखी तथा कामवासना के प्राधान्यवाले अंतर्मुखी व्यक्तियों के साहित्य में वर्ण्य-विषय, चरित्र, शैली आदि का पर्याप्त अंतर रहता है। अंतर्मुखी रचनाएँ व्यक्ति प्रधान तथा बहिर्मुखी की विषय प्रधान होती है।"[28] मनोविज्ञान का उद्देश्य ही मानवगत मानसिक क्रियाओं को गोपनीय न रहकर, साहित्य के माध्यम से खुलकर रखना है।

मनोविज्ञान व्यक्ति के व्यवहार का अध्ययन करता है। मनोविज्ञान व्यवहार के दृष्टिकोण से शारीरिक प्रक्रियाओं का अध्ययन करता है अर्थात् वह यह जानने की चेष्टा करता है कि किन शारीरिक क्रियाओं से क्या व्यवहार अभिव्यक्त होता है। इस प्रकार मनोविज्ञान शारीरिक क्रियाओं के पीछे छिपी मानसिक क्रियाओं

का अध्ययन करता है। मनोवैज्ञानिक वर्णन व्यक्ति के व्यवहारों, अनुभवों, प्रयत्नों, इच्छाओं, विचारों और चेष्टाओं का वर्णन होगा। मनोविज्ञान विभिन्नताओं का भी अध्ययन करता है। वह केवल मानव की विभिन्न अवस्थाओं का ही नहीं बल्कि इन अवस्थाओं में उनके विकास का भी अध्ययन करता है।

संदर्भ

1. सरल मनोविज्ञान- लालाजिराम शुक्ल-पृ. २

2. Psychology and Introduction-W.S.Roy- p.14.

3. Essentials of Psychology-Pillusburry-p.14.

4. मनोविश्लेषण और साहित्यालोचन-पुरोवाक्

5. हिंदी उपन्यासों का मनोविश्लेषणात्मक अध्ययन-डॉ.गिरिधर प्रसाद शर्मा-पृ.२०१

6. फैक्ट एण्ड द ओरिस ऑफ साइकोएनोसिस-आयव्स हेण्ड्रिक-पृ.१९

7. Psychology-Jems Winfred Bridges-p.7-8

8. मनोविश्लेषण और मानसिक क्रियाएँ-डॉ.पद्मा अग्रवाल-पृ.१६०

9. Collected paper-Sigmund Freud-vol.iv- p.175

10. Civilization and its dissentents-Freud-p.28

11. मनोवैज्ञानिक सिद्धांत और काव्य आलोचना-पं.गंगाधर झा,पृ.९१

12. Contribution to Analytic Psychology-Jung-p.235

13. मनोविज्ञान के क्षेत्र-डॉ.राममूर्ति लुंबा-पृ.४१

14. साहित्य शास्त्र के नए प्रश्न-देवराज उपाध्याय.पृ.२५

15. नवीन मनोविज्ञान-लालाजीराम शुक्ल-पृ.६३

16. प्रसाद की साहित्य साधना-शंभूतनाथपांडेय-पृ.२१

17. प्रसाद का साहित्य-रत्नशंकर प्रसाद-पृ.२६

18. प्रसाद का काव्य-डॉ.प्रेमशंकर-संस्करण-१९७२

19. प्रसाद के नाम पत्र-संपादक रत्नशंकर प्रसाद-पृ.२८

20. प्रसाद का विकासात्मक अध्ययन-किशोरीलाल गुप्त-पृ.३१

21. प्रसाद गद्य-डॉ.सूर्य प्रकाश दीक्षित-पृ.२२

22. प्रसाद का साहित्य- प्रेम-तात्विक दृष्टि.पृ.३१

23. प्रसाद आलोचनात्मक सर्वेक्षण-डॉ,रामप्रसाद मिश्र.पृ.२४

24. प्रसाद की कहानियाँ प्रवृत्ति मूलक विशेषण-डॉ.एस.टी.नरसिंहाचारी-पृ.४२

25. प्रसाद के नाटक-रचना और प्रक्रिया-डॉ.जगदीश प्रसाद श्रीवात्सव.पृ.४२

26. राजेंद्र यादव एक दुनिया-समानंतर.पृ.१७

27. कार्ल गुस्ताव युंग विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान भवानीशंकर उपाध्याय.पृ.२५९

28. पाश्चात्य कथा सिद्धांत-रामसेवक सिंह-पृ.४६